मुक्ति – परिमुक्ति – महापरिमुक्ति

मुक्त स्थितियाँ तीन प्रकार की होती हैं-
मुक्ति परिमुक्ति और महापरिमुक्ति
बुद्ध की भाषा में इन्हें ही कहते हैं-
निर्वाण, परिनिर्वाण, महापरिनिर्वाण
वमना जी ने कहा- साधना से सब काम चलता है।
मुक्ति साधना के तीन मार्ग हैं-
साधना, परिसाधना, महापरिसाधना

जो लोग निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं उन्हें अरिहंत कहते हैं
जो लोग परिनिर्वाण प्राप्त कर लेते हैं उन्हें बोधिसत्व कहते हैं
जो लोग महापरिनिर्वाण प्राप्त कर लेते है उन्ह बुद्ध कहते है।

ध्यान साधना से मुक्ति मिलती है अर्थात् श्वासानुसंधान से चित्तवृति का निरोध होने पर जो आत्मानुभव होता है, वही प्रार्थामक मुक्ति है।
परिमुक्ति परिसाधना से मिलती है।
यदि ध्यान साधना साधना हो जाती है तो
स्वाध्याय साधना परिसाधना हो जाती है।

सृष्टि के समस्त योगीश्वर तथा जगद्गुरुओं के ध्यानानुमव तथा उपदेशों का पूरी तरह अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय की साधना ही परिसाधना है। इसी से परिमुक्ति और परिनिर्वाण हो जाता है।
तीसरा है सज्जन संगति साधना। अपने से महान लोगो से सीखना, अपने से छोटे लोगो को ज्ञान का बोध कराना ही ''सज्जन सांगत्य महापरिसाधना'' कहलाता है- इसी को महापरिमुक्ति और महापरिनिर्वाण मिलते है और तब हम बुद्ध हो जाते है।
ध्यान द्वारा मुक्ति, ध्यान और स्वाध्याय से परिमुक्ति!
ध्यान, स्वाध्याय और सज्जन संगति से महापरिमुक्ति!!

केवल स्वंय के विकास का काम करने से मुक्ति, दूसरों की मुक्ति के लिए हमेशा काम करने से परिमुक्ति, समस्त प्राणियों की मुक्ति के लिए हमेशा काम करने से महापरिमुक्ति मिलती है।

सभी पिरामिड मास्टर्स महापरिसाधक, महापरिमुक्ति कामुक और बुद्ध है।